स्वच्छता से करोगे आना कानी
रोगी रहेगी मछली रानी
रोगो से मुक्ति पानि है
कुछ बाते अपनानी है
समय समय पर करो निगरानी
स्वस्छ रखो तालाब का पानी
मछली करे नीरस व्यहवार
परामर्श के संग करो उपचार
जितने दिन की दवा व दारू
उतने दिन तक रखो सुचारू
सदैव समय पर भोजन पानी
तभी निरोगी मछली रानी
अगर मछली की निर्मल काया
उसका प्रतिफल मिलेगी माया
तालाब का क्षेत्रफल सही अनुपात
मछली बढ़ेगी दिन व रात
लिखी जो बाते भूल ना जाना
मत्सकी में भी प्रथम है आना
सदैव रखना इन बातो का धयान
उपचार यही है यही निदान

कृष्णा की कलम से.....

कुछ सलाह पहाड़ी राज्यों के ठंडे पानी के जलीय कृषि किसानों के लिये

- मछली किसानों को जरूरत है कि मछली को उचित मात्रा के साथ संतुलित आहार खिलाएं।
- मछली किसानों को मत्स्य दवाई का उपयोग करने और दवाओं के सावधानीपूर्वक भंडारण के लिए जरुरी निर्देशो का पालन करना चाहिये।
- जब मछली की इच्छा खाना खाने की ना हो तो प्रतीजैवीक दवाओं के इस्तेमाल को रोक देना चाहिये।
- प्रतिरोधी जैवीक जीव के विकास की संभावनाओं को कम करने के लिए उपलब्ध अन्य प्रतीजैवीक दवाओं को बदल बदल कर उपयोग किया जाना चाहिये।
- पानी की गुणवत्ता में सुधार के साथ साथ तालाब की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिये तथा मछलियों के प्रतिरक्षीकरण के टीके, रसायनों, प्रतीजैवीक पदार्थो और दवाओं के प्रयोग को कम करना चाहिये।
- जलीय कृषि में प्रतिरक्षक रसायनों का प्रयोग कम करने से सूक्ष्मजीव प्रतिरोध के विकास को कम किया जा सकता है।
- अस्थिर रसायनों का उपयोग ही मत्स्य पालन के अभ्यास के लिये करना चाहिये।

वित्त पोषित समर्थन CIBA

भकृअनुप-केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान
अंतर्गत प्रकाशित
आल इंडिया नेटवर्क प्रोजेक्ट ऑन फिश हैल्थ

निदेशक

डॉ देबजीत शर्मा

भकृअनुप-शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय
अनुसंधान भवन औधोगिक परिसर, भीमताल 263136,
नैनीताल, उत्तराखंड, भारत
टेलीफोन नंबर : 05942-247279, 247280, 247684
फैक्स नंबर : 05942-247693
इ-मेल : director.dcfr@icar.gov.in; dcfrin@gmail.com

No-39

वर्तमान में विभिन्न पहाड़ी राज्यों में ठंडे पानी के जलीय कृषि में उपयोग होने वाली मत्स्य दवाईया

कृष्णा काला, शिवम सिंह, सुमंत कुमार मलिक, नीतू शाही, रविंदर सिंह पतियाल, सुरेश चंद्रा और देबजीत शर्मा

2020

भकृअनुप-शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल, नैनीताल, उत्तराखंड

रोग निरोगी होय निरा
रखे जो जल का ध्यान
समझ बूझ प्रयोग करे
केवल प्रतीजैवीक नहीं निदान

परिचय

रोगाणुरोधी की खोज ने बीज उत्पादन और जलीय कृषि प्रथाओं में रोगजनक शुक्ष्मजीवी संक्रमण को रोकने और इलाज के लिये रसायनो, प्रतीजैवीक पदार्थो और एक्वा दवाओं का विश्व स्तर पर उपयोग किया जाता है। कई रसायन, रोगाणुरोधी घटक और अन्य मत्स्य दवाई हैं जिनका उपयोग पशु और मछली के स्वास्थ्य के लिए किया जा सकता है। लेकिन मत्स्य पालन दवाओं पर औषधीय अनुसंधान ने मुख्य रूप से कुछ रसायनों और ड्रग्स पर ध्यान केंद्रित किया है। जो मत्स्य पालन में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। पहाड़ी राज्यों में जलीय कृषि गतिविधियों के हालिया विकास ने विभिन्न संक्रामक सूक्ष्मजीवी घटक के कारण होने वाली मछली की बीमारियों से संबंधित चुनौतियों का सामना करने के लिए विभिन्न रसायनों, प्रतीजैवीक पदार्थो और अन्य एक्वा-दवाओं के इस्तेमाल की आवश्यकता को बढ़ाया है।

क्रमांक संख्या	पहाड़ी राज्यों में सामान्यतः प्रयोग होने वाले रसायन
उत्तराखंड	नमक, चूना, लाल दवा
हिमाचल प्रदेश	नमक, चूना, लाल दवा, मैलाकाइट ग्रीन,फॉर्मलाडिहाइड घोल (फॉर्मालिन)
सिक्किम	नमक, चूना,लाल दवा,मैलाकाइट ग्रीन
मेघालय	नमक, चूना, लाल दवा
जम्मू और कश्मीर	नमक, चूना, लाल दवा,फॉर्मेलिन, बेंजालकोनियम क्लोराइड ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन,मैलाकाइट ग्रीन
अरुणाचल प्रदेश	नमक, चूना, लाल दवा
मिजोरम	नमक, चूना, लाल दवा, फॉर्मेलिन
नगालैंड	नमक, चूना

क्रमांक संख्या	रसायन के प्रयोग की मात्रा
नमक	3.0-4.0 ग्राम प्रति एक लीटर पानी
लाल दवा	2.0-3.0 ग्राम प्रति सो लीटर पानी
टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (घुलनशील)	2.5-5.0 ग्राम प्रति पाच लीटर पानी
फोर्मलिन	1.0-2.0 पी॰पी॰ऍम॰प्रति लीटर पानी
आईडोफोर	1.0 पी॰पी॰ऍम॰प्रति लीटर पानी
बेंजाइलकोनियम क्लोराइड	1.0-2.0 पी॰पी॰ऍम॰प्रति लीटर पानी
ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड	100-150 मिली ग्राम प्रति किलोग्राम मछली

वर्तमान में पहाड़ी राज्यों में ठंडे पानी के जलीय कृषि में उपयोग होने वाले मत्स्य दवाईया

एक्वा प्रोमेस एंड एक्वामिन (वजन में वृद्धि करने के लिये)

वासोरिच(प्रोबायोटिक्स) बायो-क्लीन (मृदा प्रोबायोटिक्स)

टिक-आउट (मछली जू नियंत्रक) जेन-ऑक्सी (घुलित ऑक्सीजन सुधरने के लिये)

टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (प्रतीजैवीक) चूना (अम्ल-क्षार नियंत्रक)

पोटेशियम परमैगनेट (रोगाणुनाशक) और फॉर्ममल्डीहाइड(नि:संक्रामक)

निष्कर्ष

अभी सभी पहाड़ी राज्यो की जलीय कृषि पद्धतियों में रसायनों, प्रतीजैवीक पदार्थो और अन्य मत्स्य दवाई का बहुत ज्यादा इस्तेमाल नहीं है। लेकिन पहाड़ी राज्यों में उपयोग किए जाने वाले सामान्य कीटाणुनाशक जैसे नमक, चूना और लाल दवा पहाड़ी मछलियों की पालन के लिए एक सुरक्षित अभ्यास माना जा सकता है।